संरक्षक

प्रो० आर० एल० हांगलू
कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आयोजक

प्रो० कौशल किशोर श्रीवास्तव
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
+91 9450608421

संयोजक

प्रो० उमाकान्त यादव
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
+91 9415649441

सह-संयोजक

प्रो० सुचित्रा मित्रा
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
+91 9838906637

प्रो० रामसेवक दुबे
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
+91 9415234851

सञ्चालन समिति

- डॉ० मीता बनर्जी
- डॉ० दीप्ति विष्णु
- डॉ० शारदा पाठक
- डॉ० ब्रह्मदेव द्विवेदी
- डॉ० भानुप्रकाश त्रिपाठी
- डॉ० बबलू पाल
- सन्दीप कुमार यादव

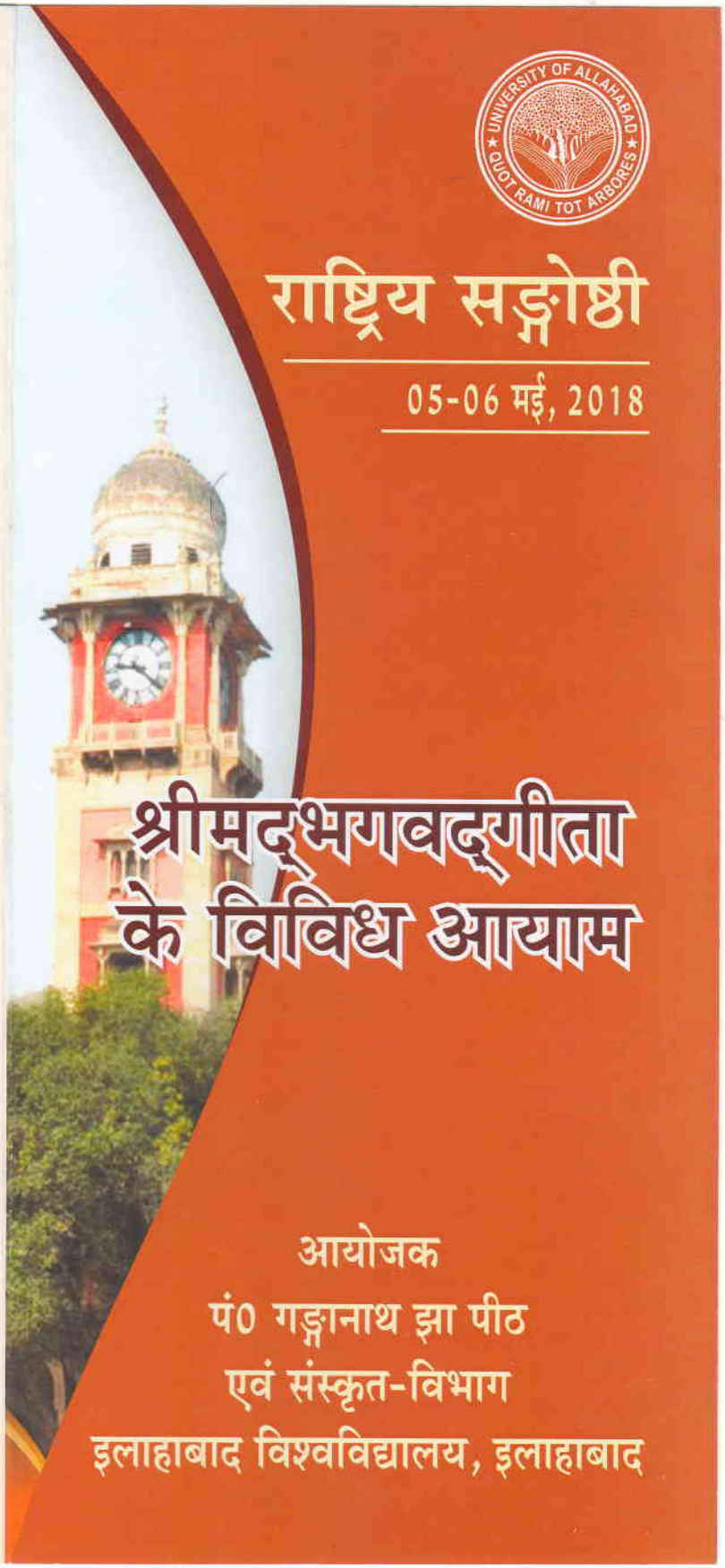

राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी

05-06 मई, 2018

श्रीमद्भगवद्गीता के विविध आयाम

आयोजक
पं० गङ्गानाथ झा पीठ
एवं संस्कृत-विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मान्यवर,

विश्व में प्रतिष्ठित विविध धर्मों के पृथक्-पृथक् धर्मग्रन्थ हैं और उनमें तत्तद्धर्मानुनायियों की प्रगाढ़ आस्था भी है किन्तु प्रख्यात महाकाव्य महाभारत के 'भीष्मपर्व' में उपदिष्ट भगद्वाणी श्रीमद्भगवद्गीता सर्व समादृत तथा सर्वग्राह्य है। गीता विश्व-कल्याण-कोष है, जीवन जीने की कला है, सामाजिक-विज्ञान है, योगविद्या है, सत्कर्मों की प्रेरणा है, मनोविज्ञान है, कुमार्गनिवारक है, अकर्मण्यता का अपवारक है, मनोचिकित्सा है एवं समग्र विकास का पथ है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय आध्यात्मिक वाङ्मय का विशिष्ट ग्रन्थ है। गीता माहात्म्य में इसे वेद तथा उपनिषद् का अमृत कहा गया है, पुनश्च नीलकण्ठ शास्त्री ने इसमें महाभारत का सम्पूर्ण सार आ जाने से इसे सर्वशास्त्रमयी की सञ्ज्ञा से अभिहित किया है। अनेक भारतीय एवं पाश्चात्त्य विद्वानों ने गीता को मानव-धर्म-ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित किया है। टी0 एस0 इलियट ने गीता को मानव वाङ्मय की मूल्यवान निधि कहा तो एफ. टी. ब्रुक्स ने इसे मानव-जाति के उज्ज्वल भविष्य का निर्माता माना। फर्क्यूहर गीता को अनुपमेय कहते हैं तो श्री अरविन्द भारतीय आध्यात्मिकता का परिपक्व सुमधुर फल। गीतारसामृत के रचनाकार शिवानन्द की दृष्टि में भगवद्गीता शाश्वत दर्शन का सर्वाधिक क्रमबद्ध आध्यात्मिक कथन है। आग्स्ट विल्हेल्म का कथन है कि संसार में जितने भी ग्रन्थ हैं उनमें श्रीमद्भगवद्गीता जैसा सूक्ष्म एवं उन्नत विचार कहीं नहीं मिलता। वस्तुतः गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की बंसी का वह गीत है जिसकी प्रत्येक ध्वनि सत्य और सुन्दरता से सम्पन्न आध्यात्मिक जीवन को जागृत करने वाली है। ज्ञानमार्गियों के लिये ज्ञानमयी तो भक्तिमार्गियों के लिए यह भक्ति का स्रोत है। कर्मवादियों के लिए निष्काम कर्म का प्रतिपादन इसका मुख्य लक्ष्य है। जहाँ एक ओर गीता-ज्ञान की कामधेनु है वहीं दूसरी ओर स्वधर्म से विमुख किंकर्तव्यविमूढ़ जन को धर्म का सन्देश एवं विजय का वरदान देने वाली विश्व पुरुष की दिव्यवाणी है। कर्मशास्त्र एवं मोक्षशास्त्र का प्रतिपादन करने वाला तथा मानव-जीवन की मौलिक समस्याओं का समाधान करने वाला गीता के अतिरिक्त कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है, जिनमें धर्म, दर्शन, अध्यात्म एवं नीति का उत्कृष्ट निरूपण एक ही ग्रन्थ में उपलब्ध हो। समय के साथ बदलते परिदृश्य में अनेक मान्यताएं जहाँ अपना महत्त्व खोती हुई दृष्टिगोचर होती हैं, वहीं श्रीमद्भगवद्गीता इनका अपवाद है। वह महाभारत युग में जितनी प्रासङ्गिक थी, हजारों वर्ष बीत जाने पर आज भी उतनी ही प्रासङ्गिक तथा उपयोगी है।

श्रीमद्भागवद्गीता पर आधारित अनेकानेक गवेषणाएं हो चुकी हैं फिर भी इसके ज्ञान की इति नहीं हुई, यही कारण है कि इसके अन्दर छिपे रहस्य पर विचार-विमर्श की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महती आवश्यकता है। गीता के इसी माहात्मय को व्यापक प्रसार द्वारा, रेखांकित करने के उद्देश्य से संस्कृत विभाग एवं पं0 गङ्गानाथ झा पीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में **'श्रीमद्भगवद्गीता के विविध आयाम'** विषय पर 05 एवं 06 मई, 2018 को द्वि-दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया गया है। जब अनेक विद्वानों द्वारा एक साथ बैठकर श्रीमद्भगवद्गीता के विविध आयामों पर पारस्परिक विचार-विमर्श होगा तो निश्चित रूप से अध्येताओं के ज्ञान-विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। सभी मनीषियों से इस महनीय कार्य में योगदान करने हेतु उनके बहुमूल्य विचार आमंत्रित हैं।

उपविषय

1. श्रीमद्भगवद्गीता में योग की अवधारणा
2. श्रीमद्भगवद्गीता में दार्शनिक सिद्धान्त
3. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित धर्म
4. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित मानव-मूल्य
5. श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित नैतिक एवं आचार-शास्त्रीय तत्त्व
6. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित लोक-कल्याण की भावना
7. श्रीमद्भगवद्गीता में आध्यात्मिक चिन्तन
8. श्रीमद्भगवद्गीता में समाज-शास्त्रीय चिन्तन
9. श्रीमद्भगवद्गीता में राष्ट्रिय चेतना
10. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रबन्धन
11. श्रीमद्भगवद्गीता में राजनीतिक चिन्तन
12. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की प्रासंगिकता

शोध-पत्र आमंत्रण

संगोष्ठी के मुख्य विषय एवं उप-विषयों पर आधारित शोध-पत्र दिनांक **25 अप्रैल, 2018** तक आमंत्रित हैं। शोध-पत्र 3000 से 5000 शब्दों तक स्वीकार्य होंगे। शोध-पत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। हिन्दी और संस्कृत भाषा में टंकण Kruti Dev 010 (14 Pt.) में तथा अंग्रेजी भाषा Times New Roman (12 Pt.) में टंकण में होना चाहिए। शोध-पत्र संयोजक के ई-मेल ukyadavau@gmail.com पर भेजें।

पञ्जीकरण शुल्क

प्रतिभागियों का अग्रिम पञ्जीकरण अनिवार्य है। पञ्जीकरण शुल्क शोधच्छात्रों के लिए रु. 1200/- तथा शिक्षकों के लिए रु. 1500/- निर्धारित है, जिसे इलाहाबाद में भुगतेय **अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय** के पक्ष में निर्गत बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नकद धनराशि जमा कर रसीद प्राप्त की जा सकती है।

नोट : आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों को छोड़कर वाह्य प्रतिभागियों को आवासीय व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

श्रीमद्भगवद्गीता के विविध आयाम

राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी

05-06 मई, 2018

पञ्जीकरण-प्रपत्र

नाम :.....

पद :.....

संस्था/विश्वविद्यालय :.....

महाविद्यालय :.....

विशेषज्ञता :.....

पता (पत्र-व्यवहार हेतु) :.....

दूरभाष संख्या (आवासीय).....:

(कार्यालयीय) :.....

ई-मेल :.....

शोध-पत्र का शीर्षक :.....

आगमन तिथि .....समय.....

प्रस्थान तिथि.....समय.....

दिनाङ्क : .....हस्ताक्षर.....

बुक-पोस्ट

प्रतिष्ठा में,

संयोजक,
राष्ट्रिय संगोष्ठी, संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रेषक : _____

_____

_____